पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 01.09.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

स्वामी आर्यवेश जी का धन्यवाद

कर्मठ आर्य नेता **डा.अनिल आर्य** को आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक सभा का **उपाध्यक्ष** मनोनीत करने पर हार्दिक आभार

वर्ष-31 अंक-7 भाद्रपद-2071 दयानन्दाब्द 190 01 सितम्बर से 15 सितम्बर 2014 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.09.2014, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 10 दिन में 41 युवा संस्कार समारोह सम्पन्न

दस हजार युवक युवतियों ने यज्ञोपवीत ग्रहण कर ली ''वैदिक धर्म की दीक्षा''

संस्कारित व चरित्रवान युवकों का निर्माण कर रही है युवक परिषद्- अनिल आर्य, अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा

आर्य समाज चन्द्रपुरी, गाजियाबाद में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का अभिनन्दन करते श्री प्रेम शर्मा, श्री मायाप्रकाश त्यागी, डा.अनिल आर्य, श्री रामकुमार सिंह, श्री प्रमोद चौधरी व द्वितीय चित्र में आर्य युवकों के साथ आर्य समाजों के अधिकारी गण।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में गत् 15 अगस्त से 26 अगस्त 2014 तक विभिन्न स्थानों पर युवा संस्कार अभियान चलाया गया जिसके अन्तर्गत 10 दिन में 41 युवा संस्कार समारोह आयोजित कर 10 हजार युवक युवतियों को यज्ञोपवीत देकर वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई। रविवार, 24 अगस्त 2014 को आर्य समाज चन्द्रपुरी, गाजियाबाद में आयोजित ''यज्ञोपवीत संस्कार समारोह'' में 101 युवक, युवतियों ने यज्ञोपवीत धारण किया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य भगवानदेव शास्त्री ने कहा कि यज्ञ से त्याग व उपकार की भावना जागृत होती है। यज्ञोपवीत हमारी पुरातन गौरवशाली संस्कृति का आधार है। समारोह में सैंकड़ों आर्य जनों ने भाग लेकर महर्षि दयानन्द के पदचिन्हों पर चलने, नशा मुक्त समाज की स्थापना करने एवं बीडी–सिग्रेट, अण्डा–मांस, शराब तथा गुटके से दूर रहने का संकल्प लिया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि हिन्दू समाज संगठित हो तभी देश सुरक्षित रह सकता है। चरित्रवान युवक ही राष्ट्र विरोधी ताकतों का मुकाबला कर सकते हैं क्योंकि चारित्रिक बल सबसे बडा बल होता है। युवकों को जीवन में समयबद्धता, अनुशासन, माता–पिता के आज्ञाकारी, आत्मविश्वास, संकल्पवान और देशभक्त होना चाहिये। ऐसे देशभक्त चरित्रवान युवकों का युवक परिषद् निर्माण कर रही है। चरित्र निर्माण राष्ट्र की सबसे बडी आवश्यक्ता है। उन्होंने आह्वान किया कि यज्ञ,वेद प्रचार व महर्षि दयानन्द की विचार धारा के प्रचार प्रसार के लिये कार्य करने के लिये युवकों को किसी से ''लाईसेन्स'' लेने की आवश्यकता नहीं है। समारोह का उद्घाटन ध्वजारोहण द्वारा आर्य नेता श्री सुनील गर्ग(प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, गाजियाबाद) ने किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। उन्होंने कहा कि धर्म समाज को जोड़ता है तोड़ता नहीं, वैदिक धर्म सर्वे भवन्तु सुखिनः की बात करता है। स्वामी आर्यवेश ने घोषणा की कि 25,000 वेदों के सैट छाप कर लागत मूल्य पर घर–घर में पॅहुचाकर वेद का प्रचार–प्रसार किया जायेगा। समारोह के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सदा से ही युवा पीढी समाज सुधार करती आई है। आज भी करना होगा। समाज में फैली हर बुराई को दूर करने का बीडा उठाना होगा। अब चाहे वे बुराईयॉ देहिक हों, देविक हों, सामाजिक हों, मानसिक हों भौतिक हों या फिर राजकीय हों। आज–कल के युवको को हम शिक्षा तो दे रहे हैं पर दिशा नहीं। आज युवकों को सही दिशा का ज्ञान, अपने कर्तव्यों का ज्ञान अपनी सांस्कृतिक धरोहर और भावी पीढी के उत्तरदायित्व को उठाने का ज्ञान सुचारू रूप से होना बहुत आवश्यक है। उपसभा गाजियाबाद के प्रधान श्री श्रद्धानन्द शर्मा, मन्त्री श्री ज्ञानेन्द्रसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र सिंह, श्री तेजपालसिंह आर्य, डा.आर.के.आर्य, आचार्य सतीश सत्यम, पं0 हीराप्रसाद शास्त्री, श्री रामकुमार सिंह, श्री अजय पथिक आदि ने अपने विचार रखे। अध्यक्षता श्री प्रमोद चौधरी, प्रधान आर्य समाज वृन्दावन गार्डन ने की व संचालन श्री प्रवीन आर्य ने किया। व्यायाम शिक्षक श्री सौरभ गुप्ता के निर्देशन में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के युवक–युवतियों द्वारा भव्य योग, व्यायाम एवं शारीरिक शक्ति प्रदर्शन किया गया, जिसकी दर्शकों ने बहुत प्रशंसा की। ऋषि लंगर का सुन्दर प्रबन्ध किया गया था। इसी प्रकार परिषद् ने अपने उद्घोष ''जहां नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् है उसका नाम'' को देश भर में सार्थक कर दिखाया।

दुर्गापुरी में स्वामी आर्यवेश का स्वागत व नया बाजार में शराब के ठेके के विरूद्व प्रदर्शन

रविवार, 24 अगस्त 2014, आर्य समाज, दुर्गापुरी, शाहदरा, दिल्ली में स्वामी आर्यवेश जी का भव्य अभिनन्दन करते प्रधान श्री प्रीतमसिंह पीतम, मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य, श्री रामकुमार सिंह, डा.अनिल आर्य आदि। यज्ञ श्री महेन्द्र भाई ने करवाया। द्वितीय चित्र में शनिवार, 23 अगस्त 2014 को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली के (देश के शहीद मन्दिर) सामने शराब का ठेका खोलने के विरूद्व प्रदर्शन करते प्रबुद्व व्यापारी गण। श्री ओमप्रकाश जैन व श्री नरेश कुमार गुप्ता (दिल्ली ग्रेन मर्चेन्ट एसोशियन) के नेतृत्व में विशाल धरना कई दिन चला। डा. अनिल आर्य ने धरने पर पंहुच कर व्यापारियों को सम्बोधित करते हुए विश्वास दिलाया कि समस्त आर्य समाज आपके साथ खड़ा है। श्री आशुतोष (आम पार्टी नेता), श्री विजेन्द्र गुप्ता (भाजपा), श्रीमती सुलेखा जैन, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, स्वामी सौम्यानन्द जी, कै.अशोक गुलाटी आदि ने भी विचार रखे। राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री, उपराज्यपाल महोदय को ज्ञापन भी दिया गया।

ईश्वरीय ज्ञान वेदों की प्रचारक आर्य समाज धार्मिक जगत की सर्वोत्तम विजयी संस्था

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आर्य समाज क्या है? इसका उत्तर है कि आर्य समाज वेदों के सत्य सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार का एक आन्दोलन है। पुनः प्रश्न उत्पन्न होता है कि वेद क्या हैं? इसका उत्तर है कि वेद ज्ञान को कहते हैं। इसके साथ वेद शब्द का प्रयोग उस ज्ञान के लिए भी किया जाता है जो सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को प्राप्त हुआ था। यह चार ऋषि सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने उत्पन्न किये थे। इनके अतिरिक्त भी सहस्रों स्त्री व पुरूष युवावस्था में ईश्वर के द्वारा उत्पन्न किये गये थे। इन उत्पन्न मनुष्यों के माता–पिता न होने के कारण इस सृष्टि को अमैथुनी अर्थात् बिना माता–पिता की सृष्टि कहा जाता है। ईश्वर है तो उसका स्वरूप कैसा है, इसका संक्षिप्त उत्तर यह है कि ईश्वर सत्य, चित्त, आनन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता आदि गुणों से युक्त है। इस स्वरूप वाले ईश्वर ने सृष्टि की आदि में उत्पन्न सहस्रों मनुष्यों में से चार ऋषियों को चार वेदों यथा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान उनकी आत्माओं में स्थापित करके दिया था। इसी के साथ वेदों की जो भाषा है उसको जानने, समझने व उसके प्रयोग व उपयोग का ज्ञान अर्थात् शब्द, अर्थ व सम्बन्ध का ज्ञान भी ईश्वर ने इन्हें दिया था। ईश्वर के द्वारा न चार ऋषियों को प्रेरणा की गई थी वह यह ज्ञान अन्य ऋषि ब्रह्मा जी को प्रदान करें। जिस प्रकार से एक गुरू अपने शिष्य को ज्ञान प्रदान करता है, इसी प्रकार से ब्रह्माजी ने चार ऋषियों से वेदों का ज्ञान प्राप्त कर उसे अन्य स्त्री–पुरूषों को प्रदान किया। सृष्टि के आरम्भ काल से परम्परा से यह ज्ञान ही महाभारत काल व उसके बाद आज तक चला आ रहा है। महाभारत काल व उसके बाद वेदों का ज्ञान लोगों के आलस्य व प्रमाद के कारण विलुप्ति की ओर अग्रसर था परन्तु स्वामी विरजानन्द सरस्वती व महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि अनेक महापुरूषों के पुरूषार्थ से यह विलुप्त हो रहा ज्ञान उपलब्ध हो गया और सम्प्रति सुरक्षित है एवं भविष्य के लिए भी सुरक्षित हो गया है। महर्षि दयानन्द ने अपने अपूर्व पुरूषार्थ से वेदों का ज्ञान उसे शब्द, अर्थ व सम्बन्ध सहित प्राप्त किया। उन्होंने वेदों के दिग्दर्शन व प्रचार करने के लिए एक अपूर्व अद्भुद ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन किया जिसमें उन्होंने वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों के ज्ञान एवं उनके समय में प्रचलित सभी बड़े व छोटे मतों का उल्लेख कर उनका विवरण देने के साथ उनकी वेदों की मान्यताओं से तुलना कर समीक्षा भी प्रस्तुत की है। यह ग्रन्थ विश्व के धार्मिक साहित्य में अन्यतम है। आईये, संक्षेप में समाजोपयोगी कुछ वैदिक मान्यताओं पर विचार करते हैं। सबसे पहली ईश्वर विषयक मान्यता को लेते हैं। ईश्वर का वेदानुसार जो स्वरूप है उसका उल्लेख उपर्युक्त पंक्तियों में किया गया है। इसी प्रकार से वेदों के अनुसार जीवात्मा का स्वरूप सत्य, चित्त, आनन्द–प्राप्ति के लिए सक्रिय, दुःखों से द्वेष करने वाला, सुख की इच्छा करने वाला, अल्पज्ञ, एकदेशी, आकार रहित, सूक्ष्म, जन्म–मरण–धर्मा, बन्ध व मोक्ष के बीच फंसा हुआ, बुरे कर्मों से बन्धन में फंसता है तथा वेदोक्त कर्म व जीवन बनाकर बन्धनों को शिथिल कर ईश्वर की उपासना से मोक्ष को प्राप्त होकर जीवन के लक्ष्य को सफल करता है। मनुष्य का जन्म पूर्व जन्म में आधे से अधिक अच्छे कर्म को करने पर ईश्वर देता है। यह मनुष्य जीवन भोग व अपवर्ग के लिए मिलता है और इसी उद्देश्य के लिए यह सृष्टि का चक्र चल रहा है।

संसार में तीसरा पदार्थ है प्रकृति जो कि चेतन तत्व न होकर इसके विपरीत धर्म वाला जड़ तत्व है। प्रकृति अति सूक्ष्म तत्व है परन्तु इससे भी सूक्ष्म जीवात्मा और प्रकृति और जीवात्मा से भी सूक्ष्म ईश्वर है। प्रकृति जब अपनी मूल या कारण अवस्था में रहती है तो यह परमाणु से पूर्व की अवस्था होती है। इस मूल प्रकृति में सत्व, रज व तम गुण होते हैं जो ईश्वर की प्रेरणा से विकृत होकर विविध परिवर्तनों के होने से प्रथम महतत्व, फिर अहंकार, पांच तन्मात्रायें, मन, बुद्धि, चित्त व स्थूल पदार्थ पृथिवी, अग्नि, चल, वायु व आकाश आदि बनते हैं। विज्ञान के अनुसार जो इलेक्ट्रान, प्रोटान व न्यूट्रान आदि कण हैं वह मूल प्रकृति के ही विकार हैं और जो विभिन्न प्रकार के परमाणु हैं वह ईश्वर की प्रेरणा व उसके बनाये नियमों के अनुसार अस्तित्व में आते हैं। इस प्रकार से सारा जड़ जगत भी ईश्वर के द्वारा जीवात्माओं के भोग, अभ्युदय व निःश्रेयस् के उद्देश्य की पूर्ति के लिए अस्तित्व में आया है। ईश्वर जीव व प्रकृति का वर्णन वेद एवं वेदानुकूल वैदिक ग्रन्थों में उल्लेखित है जो प्रमाणिक एवं सत्य है। महाभारत काल के बाद हमारे देश के लोगों में आई भिथिलता, आलस्य व प्रमाद के कारण हम इस ज्ञान का उपयोग कर वैज्ञानिक आविष्कार नहीं कर सके और इसका श्रेय हमारे यूरोप के बन्धुओं को मिला।

आर्य समाज वेदों के इन सिद्धान्तों का प्रचार करने के साथ वेदों की अन्य सभी मान्यताओं का प्रचार भी करता है। इसका उद्देश्य सत्य का अनुसंधान कर स्वयं उसे मानना व मौखिक व लिखित प्रचार तथा उपदेश आदि के द्वारा दूसरों से मनवाना भी है। सत्य को जानना व मानना, असत्य को छोड़ना व छुड़वाना, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि, सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार व यथायोग्य व्यवहार आदि के बिना मनुष्य जाति की उन्नति का अन्य कोई कारण या उपाय नहीं है। महर्षि दयानन्द ने वेदों का अनुसंधान पूर्वक अध्ययन किया और पाया कि सृष्टि के इतिहास में वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तकें हैं। वेदों का पढ़ना व दूसरों को पढ़ाना, स्वयं इनकी शिक्षाओं को मानना, पालन करना व दूसरों से मनवाना व पालन करवाना ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य है। जीवात्मा का एक कर्तव्य ईश्वर को जानकर उसकी उपासना करना भी है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वेदों के इतिहास में ज्ञात विद्वानों में सबसे प्रवर विद्वान महर्षि दयानन्द ने उपासना करने के लिए ध्यान की पद्धति हेतु ''सन्ध्या'' नामक एक पुस्तक की रचना की, जो आकार में बहुत छोटी है परन्तु इसका अनुसरण व आचरण करके जीवन के उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है। अग्निहोत्र भी मनुष्य जीवन का आवश्यक कर्तव्य है। इसके लिए भी स्वामी दयानन्द ने एक सरल पद्धति लिखी है। सभी वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों का ज्ञान उनकी बनाई हुई सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, संस्कार विधि, वेदभाष्य, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों के अध्ययन से जाना जा सकता है। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन काल में सभी मतो, पन्थों, सम्प्रदायों व मजहबों के गुरूओं तथा मताचार्यों को वेदों की सत्यता जानने के लिए वार्तालाप, बातचीत, भाास्त्रचर्चा व भाास्त्रार्थ करने की चुनौती दी थी। इसके साथ उन्होंने प्रचलित सभी अवैदिक मतों की अज्ञानतायुक्त मान्यताओं का खण्डन किया और उन्हें चुनौती दी कि वह उन्हें सत्य सिद्ध करें वा भाास्त्रार्थ करें। जो लोग सामने आये वह पराजित हुए और बाकी इस डर से कि उनका मत असत्य व अज्ञानपूर्ण बातों से भरा पड़ा है जिनका उनके पास समुचित उत्तर नहीं है, वह मौन साध रहे व उन्होंने महर्षि के भाास्त्रार्थ की चुनौती को दृष्टि से ओझल करने में ही अपना हित समझा। अज्ञानता व स्वार्थ पर आधारित सभी वेदेतर मत आज भी फल फूल रहे हैं। आज स्थिति यह है कि कोई उन्हें अपना पक्ष, मान्यता व सिद्धान्तों को सत्य सिद्ध करने की चुनौती नहीं देता और न ही वह दूसरों को चुनौती देते हैं। सभी अपने घरों में भोर की भांति हैं। इस कारण धर्म की सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों का प्रचार व क्रियान्वयन अवरूद्ध है। आर्य समाज धार्मिक जगत में सब पर विजय की स्थिति में है जिसका कारण वह किसी से भी अपने किसी भी सिद्धान्त पर चर्चा करने को तत्पर है और दूसरों के मतों पर भी चर्चा करने के लिए तत्पर है। आर्य समाज ने अपना इस विषय का लिखित साहित्य भी देश–देशान्तर में प्रचालित किया हुआ है जिसको जानकर विपक्षियों में सत्य के निर्णय का साहस ही नहीं होता। जिस प्रकार से विज्ञान के सत्य सिद्धान्त हैं, उसी प्रकार से ही वेदों व आर्य समाज की मान्यतायें व सिद्धान्त भी हैं जो सब सत्य, युक्तिपवूर्ण, बुद्धिसंगत व तर्कपूर्ण हैं। यही वेदोक्त धर्म आज और भविष्य के एकमात्र वैज्ञानिक मानव धर्म का अनुसंधानपूर्ण स्वरूप है। एक न एक दिन सारी दुनियां को वेदों को सत्य सिद्धान्तों को मानना ही होगा होगा क्योंकि चारों वेद ईश्वर से आविर्भूत हैं एवं सत्य मान्यताओं के समुद्रवत् हैं। आर्य समाज, जो कि आज वैदिक धर्म का पर्याय बन गया है, धर्म के क्षेत्र में एक दिग्विजयी संस्था के रूप में उपस्थित है जिसका श्रेय, ईश्वर, हमारे सभी ऋषि–मुनियों, स्वामी विरजानन्द व उनके शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती सहित आर्य समाज के सभी प्रचारकों, विद्वानों व अनुयायियों को है।

– पताः 196 चुक्खुवाला –2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

वर्ष 2015 का कलैन्डर

स्वामी दयानन्द का रंगीन चित्र, हिन्दी तिथि एवं पर्वो सहित
आर्ट पेपर पर सुन्दर आकर्षक छपाई
800/- रूपये प्रति सैकड़ा (1000 लेने पर समाज का नाम एवं पता, दूरभाष आदि की छपाई निःशुल्क की जाएगी।)

सम्पर्क सूत्रः मयंक प्रिन्टर्स
2199/64 नाई वाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005
दूरभाषः 09810580474, 011-41548503
E-mail: mayankprinters5@gmail.com

भारत माता की जय ।। ओ३म् ।। सत्यार्थ प्रकाश अमर रहे

निमन्त्रण पत्र

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का 36वाँ वार्षिक अधिवेशन एवम्

बलमुपास्व

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन

रविवार, 7 सितम्बर 2014, प्रातः 9.00 से 5.00 बजे तक

स्थान : योग निकेतन सभागार,

30A, रोड न०-78, पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26

(स्वामी योगेश्वरानन्द जी की तपोस्थली)

राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं में आर्य समाज की भूमिका पर विचार

देश भर के चुने हुए आर्य युवा प्रतिनिधियों का भव्य समागम

यज्ञ : प्रातः 9 से 10 बजे तक, अल्पाहार 10 से 10.45 तक, ऋषि लंगर 1 से 2 तक

आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

: निवेदक :

डॉ.अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	कृष्णचन्द पाहूजा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	यशोवीर आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	रामेश्वर गोयल स्वागताध्यक्ष
महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामन्त्री	सत्यभूषण आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	रामकुमार सिंह राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	विपिन रहेजा स्वागत मंत्री
धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	मनोहरलाल चावला राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	रामकृष्ण शास्त्री राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	गवेन्द्र शास्त्री बौद्धिकाध्यक्ष
दुर्गेश आर्य वरिष्ठ मंत्री	आनन्दप्रकाश आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	वीरेन्द्र योगाचार्य राष्ट्रीय मन्त्री	देवेन्द्र भगत प्रैस सचिव
राकेश भटनागर राष्ट्रीय मन्त्री	प्रवीण आर्य राष्ट्रीय मन्त्री	सुशील आर्य राष्ट्रीय मन्त्री	सन्तोष शास्त्री प्रान्तीय महामन्त्री

कार्यक्रम

यज्ञ : प्रातः 9 से 10 तक ब्रह्मा : आचार्य ब्रह्मदेव वेदालंकार

मुख्य यजमानः सर्वश्री धर्मदेव खुराना, सुरेश आर्य, सुरेन्द्र मानकटाला, नरेन्द्र कालरा

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन : प्रातः 11.00 से सांय 5.00 बजे तक

अध्यक्षता :
डॉ. अशोक कुमार चौहान
(संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

ध्वजारोहणः
श्री दर्शन अग्निहोत्री
(प्रधान, वैदिक साधन आश्रम देहरादून)

मुख्य अतिथिः

श्री सतीश उपाध्याय
(प्रदेश अध्यक्ष,भा.ज.पा.दिल्ली)

श्री प्रवेश वर्मा
(संसद सदस्य)

श्री विजय शर्मा
(प्रदेश संगठन मंत्री,भाजपा)

विशिष्ट अतिथिः

श्री आनन्द चौहान
(निदेशक, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

प्रो.जगदीश मुखी
(विधायक व पूर्व वित्त मंत्री,दिल्ली)

श्री ओमप्रकाश सिंघल
(केन्द्रीय उपाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्)

श्री नन्दकिशोर गर्ग
(विधायक, दिल्ली)

स्वामी आर्यवेश जी
(प्रधान, सार्वदेशिक सभा)

श्री मांगेराम गर्ग
(पूर्व विधायक, दिल्ली)

श्री योगेन्द्र चंदोलिया
(महापौर, उ.दि.नगर निगम)

श्री सुभाष आर्य
(नेता,सदन, द.दि.नगर निगम)

श्री मायाप्रकाश त्यागी
(कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा)

: आमन्त्रित वैदिक विद्वान व आर्य नेता :

स्वामी प्रणवानन्द जी (अध्यक्ष, योग निकेतन)	स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (गौतमनगर)	डॉ. महेश विद्यालंकार
	आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज	डॉ. सारस्वतमोहन मनीषी
स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (हरिद्वार)	श्री गोबिन्दसिंह भंडारी (बागेश्वर)	स्वामी धर्ममुनि जी (हरियाणा)
स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (पलवल)	श्री अतुल कोठारी	श्री धनेश्वर बेहरा (उड़ीसा)
श्री दीनानाथ बत्रा	डॉ.सुन्दरलाल कथूरिया	श्री ऋषि आर्य (हिमाचल)
डॉ.राजेश्वर जिज्ञासु (पटना)	श्री यशपाल आर्य (पार्षद)	श्री भानुप्रताप वेदालंकार (इन्दौर)
आचार्य प्रेमपाल शास्त्री (दिल्ली)	श्री कृष्णप्रसाद कौटिल्य (हजारीबाग)	श्री सुभाष बब्बर (जम्मू)
डॉ. धर्मपाल आर्य (दिल्ली)	श्री मित्रमहेश आर्य (अहमदाबाद)	आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा
डॉ. सुधीर गुप्ता (पंजाब)	ब. विश्वपाल जयन्त (उत्तराखण्ड)	डॉ. वीरपाल विद्यालंकार (उ0प्र0)

अल्पाहार : सांयः 5 से 5:30 बजे तक

विशेष आमन्त्रित अतिथि

श्री बृजमोहन मुन्जाल	श्री बलदेव जिन्दल	श्री रूद्रसेन सिन्धु	श्री रविदेव गुप्ता
श्री टी.आर.गुप्ता	श्री सुरेन्द्र कोहली	श्री नवीन रहेजा	श्री सुशील मदान
श्री के.एस. यादव	श्री मनोज दुआ	श्री रामकृष्ण तनेजा	श्री प्रकाशवीर बत्रा
श्री बी. बी. तायल	श्री मुंशीराम सेठी	श्री अरूण आर्य(जम्मू)	श्री हरिमोहन शर्मा (बब्बू)
श्री प्रदीप तायल	श्री जितेन्द्र डावर	श्री अशोक जेठी	कविता-राजीव खन्ना
आ. शिववीर शास्त्री	श्री चत्तरसिंह नागर	श्री संजीव सिक्का	श्री अरूण बन्सल
श्री राजकुमार अग्रवाल	श्री सुरेन्द्र गुप्ता	श्री योगराज अरोड़ा	श्री महेश भार्गव
श्री महेन्द्र बूटी	विजयारानी शर्मा	श्री अरूण अग्रवाल	श्रीमती निर्मल जावा
श्री टी.आर.मित्तल	चन्द्रप्रभा अरोड़ा	श्री अविनाश बन्सल	श्रीमती शशिप्रभा आर्या
श्री सुरेन्द्र गम्भीर	श्रीमती आदर्श सहगल	श्री रमाकान्त सारस्वत	श्री नरेन्द्र आर्य सुमन
श्री जितेन्द्र नरूला	श्री राजपाल पुलयानी	सुश्री सरोजनी दत्ता	श्रीमती सुषमा सर्राफ
श्री अशोक सरदाना	श्री सी.एल.मोहन	श्री रामलुभाया महाजन	श्री प्रभात शेखर
श्री रविन्द्र मेहता	श्री अशोक कथूरिया	श्री नरेन्द्र आहूजा"विवेक"	श्री सुधीर सिंघल
श्री धर्मपाल सिब्बल	श्री अमीरचंद रखेजा	श्री एस.एन.डंग	श्री विजय भास्कर
श्री राजेन्द्र लाम्बा	श्री नीरज भण्डारी	चौ.ब्रह्मप्रकाश मान	श्री सत्येन्द्रमोहन कुमार
श्री सुभाष कपूर	श्री राजीव परम	माता शीला ग्रोवर	श्री सोमनाथ आर्य
श्री लाल रामचंदानी	डॉ. डी.के.गर्ग	श्री रामकुमार भगत	श्री अमरनाथ गोगिया
श्रीमती गायत्री मीना	श्रीमती नीता खन्ना	श्री रवि चड्डा	श्रीमती अंजु जावा
श्री सत्यानन्द आर्य	श्रीमती प्रभा सेठी	श्री एस.के.सचदेवा	श्री ज्ञानेन्द्रसिंह आर्य
श्री जगदीश मलिक	श्रीमती रचना आहूजा	श्री ओम सपरा	श्री विकास आर्य (हापुड़)
श्री नीरज रायजादा	श्रीमती उर्मिला आर्या	श्री प्रमोद सपरा	पं.रामगोपाल शर्मा
श्री लक्ष्मीचन्द आर्य	श्री रणसिंह राणा	श्री सुनील गुप्ता	श्रीमती अर्चना पुष्करना
श्रीमती विमला ग्रोवर	प्रो. जयप्रकाश आर्य	श्री हरिचन्द स्नेही	प्रि. अन्जु महरोत्रा
श्री महेश गुप्ता	श्री कस्तूरीलाल मक्कड़	श्री मुनीष चौटानी	श्रीमती स्वर्णा गुप्ता
श्री पी.के.मित्तल	श्री भारतभूषण साहनी	श्री के.एल.पुरी	श्री आर.एस.तोमर
श्री रामकृष्ण सतीजा	श्री रमेश गाडी	डॉ. ओमप्रकाश मान	श्री मधुरप्रकाश आर्य
श्री बी.पी.यादव	डॉ. आर.के.आर्य	श्री अजय जिंदल	श्री राजेश मेहन्दीरत्ता
श्री राजेन्द्र बत्रा	श्री श्रद्धानन्द शर्मा	श्री संजीव शर्मा	श्री सुरेन्द्र शास्त्री
श्री राजेश गोगना	श्री सत्यवीर चौधरी	डॉ. दीपक सचदेवा	श्री हरिओम दलाल

"आर्य युवा रत्न अवार्ड" से सम्मानित होगें

श्री विद्याभूषण आर्य (फरीदाबाद), श्री शांतिप्रकाश आर्य (करनाल) व श्री जवाहर भाटिया -
श्री प्रवीन तायल (दिल्ली), श्री आनन्दप्रकाश वधावन (यमुनानगर) श्री सुनील गर्ग (गाजियाबाद)

श्री वी.डी.शर्मा छात्रवृति - श्री सौरभ गुप्ता व श्री शिवम मिश्रा को दी जाएगी

स्वागत समिति

सर्वश्री सत्यदेव वर्मा, राजीव कान्त, प्रवीन आर्या, वीरेन्द्र आहूजा, सोमनाथ कपूर, ओमप्रकाश आर्य, सत्यप्रकाश आर्य, ओमप्रकाश अग्रवाल, रामफल खर्ब, डॉ. मुकेश सुधीर, संजय आर्य, सन्तोष वधवा,राकेश मल्होत्रा, वेदप्रभा बरेजा, सुषमा यति, भगतसिंह राठी, संगीता गौत्तम, जितेन्दसिंह आर्य, वेदप्रकाश शास्त्री, विजय सब्रवाल, महेश भयाना, प्रभा ग्रोवर, विजय गुप्त, कृष्णलाल राणा, देवदत्त आर्य, वेदप्रकाश, पुष्पलता वर्मा, सुरेश झा, सुशील शर्मा, मनोज मान, विरेन्द्र मान (काले), आचार्य सुधांशु जी, सूबेसिंह आर्य, श्रीकृष्ण दहिया, योगेन्द्र शास्त्री, रूपनारायण बैरवा, यज्ञवीर चौहान, भूदेव आर्य, स्वतन्त्र कुकरेजा, हरेन्द्र चौधरी, महावीरसिंह आर्य, राजेश्वर मुनि (कौल), ईशकुमार आर्य (हिसार), संजीव ढाका, विकास गोगिया, विश्वनाथ आर्य, ओमवीर सिंह, गोपाल जैन, सूर्यदेव व्यायामाचार्य, जीवनप्रकाश शास्त्री, मायाराम शास्त्री, दिनेश आर्य, आचार्य योगेन्द्र शास्त्री, माता लक्ष्मी सिन्हा, राजीव कोहली, अनिल मित्रा, ओमप्रकाश मनचन्दा, विनोद बजाज, चन्द्रमोहन कपूर, हरीश भारद्वाज, बलराज सेजवाल, बलजीत आदित्य, केवलकृष्ण सेठी, गोपाल आर्य, रमेश भसीन, वी.के. रैल्ली, जयप्रकाश शास्त्री, जगदीश नागिया, वी. के. आर्य, रमेश योगाचार्य, मानवेन्द्र शास्त्री, जवाहरलाल कुमार, शिशुपाल आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री, जगदीशशरण आर्य, श्रीकान्त शास्त्री, यशपाल चावला, महेन्द्रसिंह आर्य, महेन्द्रकुमार सिंघल, कृष्णकुमार सिंघल, चन्द्रमोहन खन्ना, प्रि० श्यामलाल आर्य, राजेन्द्र खारी, प्रमोद चौधरी, के.के.यादव, प्रियव्रत आर्य, विजय कपूर, अरूण आर्य, प्रदीप आर्य, विमल कुमार, आशीष आर्य, राकेश आर्य, चन्द्रदेव शास्त्री, मकेन्द्र कुमार,अनुज आर्य, प्रकाश आर्य, सीमा कपूर, सुदेश डोगरा, महेन्द्र टांक, डॉ. जी.एस.आर्य, विजय आर्य (मोहाली), मनोज सुमन, क० जे.एस. रैना, शिवकुमार बालियान, डॉ.विवेक आर्य, राजीव आर्य, अजय तनेजा, राजकुमारी शर्मा, डॉ. वरूण शर्मा, रमेश अरोड़ा, श्यामसिंह यादव, ओमप्रकाश यजुर्वेदी, अशोक बत्रा, ओमप्रकाश नागिया, रमेश गिरोत्रा, सुरेन्द्र कोछड़, सुभाष मित्तल, कै. अशोक गुलाटी, जगदीश गुलाटी, ओमप्रकाश घई, बलदेव सचदेवा, नेत्रपाल आर्य, चंचल दास, रमेशचन्द सूद, अनिल हांडा, नंदकिशोर गुप्ता, राजमेहन, सतीश सत्यम, अनिता कुमार, हीराप्रसाद शास्त्री, भारतेन्दू आर्य(गया), रमेश खजूरिया, अमरनाथ बत्रा, आ.विरेन्द्र विक्रम, डॉ.जयेन्द्र आचार्य, सुषमा अरोड़ा सोहनलाल आर्य, शिवकुमार गुप्ता, अजय गुप्ता, डॉ.जे.पी.गुप्ता, विनोद कद, पूर्णचन्द आर्य।

दानदाताओं की सेवा में अपील

आपसे अनुरोध है कि कृपया अपना आर्थिक सहयोग क्रास चैक या ड्राफ्ट द्वारा "**केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली**" के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

केन्द्रीय कार्यालय :

आर्य समाज, टी-176 कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007

दूरभाषः 9810117464, 9958889970, 9013137070, 9868661680, 9871581398

Website : www.aryayuvakparishad.com • aryayouthgroup@yahoogroups.com

Email : aryayouth@gmail.com • aryayouthn@gmail.com

join - http://www.facebook.com/group/aryayouth

बहरोड़ में युवा संस्कार समारोह सम्पन्न व शक्ति पीठ स्कूल में मना स्वतन्त्रता दिवस

रविवार, 17 अगस्त 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् राजस्थान के तत्वावधान में राव जयपालसिंह पब्लिक स्कूल, मांजरीकलां, बहरोड़ में योगीराज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व युवा संस्कार समारोह का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें 200 युवको ने यज्ञोपवीत ग्रहण किया। महात्मा यशदेव जी, प्रान्तीय अध्यक्ष श्री रामकृष्ण शास्त्री, श्री विनोद वकील, म.सत्यपाल आर्य आदि ने विचार रखे। द्वितीय चित्र 15 अगस्त 2014 को शक्ति पीठ पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद में स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया, समारोह के मुख्य अतिथि डा. अनिल आर्य ने देश की आजादी को सम्भाल कर रखने का आह्वान किया। डा.अनिल आर्य का स्वागत करते श्री सत्यभूषण आर्य, साथ में प्रबन्धक श्री विद्याभूषण आर्य, श्रीमती प्रवीन आर्या, प्रधानाचार्या श्रीमती ज्योति आर्या व श्री सुधीर कपूर।

सुलतानपुरी दिल्ली में यज्ञ व मोहन गार्डन में विधायक महेन्द्र यादव का स्वागत

दिल्ली के सुलतानपुरी में आयोजित यज्ञोपवीत संस्कार समारोह में श्री महेन्द्र भाई जी ने यज्ञ करवाया, इस अवसर पर श्री धर्मपाल आर्य, श्री सुरेन्द्र शास्त्री आदि उपस्थित थे। श्री दशरथ भारद्वाज ने कुशल संचालन किया। द्वितीय चित्र में मोहन गार्डन, उतम नगर, दिल्ली में पार्क में कार्यकम किया गया, विधायक श्री महेन्द्र यादव का स्वागत करते डा. अनिल आर्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, श्री अंकित शास्त्री, श्री ओमबीर सिंह। संचालन श्री मानवेन्द्र शास्त्री ने किया।

आर्य समाज, कालका जी व प्रशान्त विहार दिल्ली में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

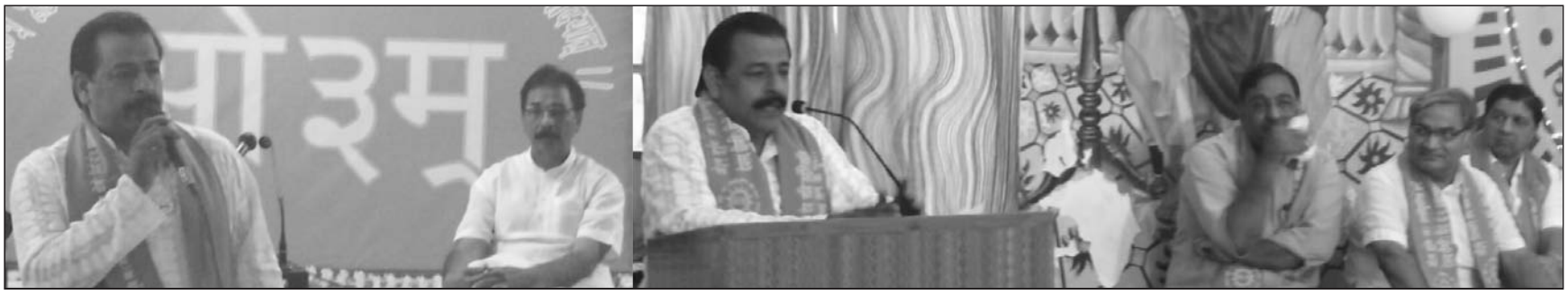

रविवार, 24 अगस्त 2014, आर्य समाज, कालका जी,नई दिल्ली के समापन पर सम्बोधित करते डा. अनिल आर्य,मंच पर श्री राजसिंह आर्य। प्रधान श्री रमेश गाडी ने आभार व्यक्त किया व मन्त्री श्री राकेश भटनागर ने कुशल संचालन किया। द्वितीय चित्र आर्य समाज प्रशान्त विहार, दिल्ली में सम्बोधित करते डा. अनिल आर्य, मंच पर विधायक श्री राजेश गर्ग, मण्डल के प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता आदि दिखाई दे रहे हैं। प्रधान श्री कृष्णचन्द पाहूजा ने आभार व्यक्त किया व मन्त्री श्री सोहनलाल मुखी ने कुशल संचालन किया।

परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य की ऐस्कॉर्टस लिमिटेड से भावभीनी विदाई

शुक्रवार, 22 अगस्त 2014,परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य की स्वैच्छिक सेवा निवृति पर सम्मानित करते श्री विनोद कुमार, श्री नरेन्द्र,श्री सुभाष, श्री महेश,श्री ललित, श्री सतपाल व चौहान आदि। द्वितीय चित्र में ऐस्कॉर्टस के महाप्रबन्धक श्री रंजन आनन्द उपहार भेंट करते हुए,साथ में श्रीमती रोजी पण्डित।

गाजियाबाद उपसभा के चुनाव में श्री श्रद्धानन्द शर्मा प्रधान,मन्त्री श्री ज्ञानेन्द्रसिंह आर्य व श्री सुरेन्द्र सिंह कोषाध्यक्ष चुने गये। द्वितीय चित्र में बिहार यज्ञोपवीत संस्कार समारोह का द्रश्य।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970